ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 7, अंक-1, अप्रैल 2019

शाम चौरासी घराने के गायन की विशेषताएँ

जगतार सिंह पनेसर

शोधार्थी, संगीत विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ

Paper recieved on : May 03, 2019, Return : May 07, 2019, Accepted : June 11, 2019

सार-संक्षेप

भारतीय शाम चौरासी के जिन विभिन्न घरानों में गुरु-शिष्य परम्परा कायम रही है उनके नाम इस प्रकार हैं, जैसे—ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना, किराना घराना, पटियाला घराना, रामपुर-सहसवान घराना और शाम चौरासी घराना इत्यादि। शाम चौरासी घराना ध्रुपदियों का घराना है। इस घराने के कलाकार शुरू से ही जोड़ियों में गाते आ रहे हैं। प्रत्येक घराने के गायन की अपनी विशेषताएँ होती हैं, इसी प्रकार शाम चौरासी घराने की विशेषताओं का उल्लेख इस शोध-पत्र में किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र को लिखने का उद्देश्य यह है कि भावी विद्यार्थी गायकी की इन तकनीकों एवं विशेषताओं से ज्ञात हों और अपने गायन में इनका प्रयोग करके एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में शाम चौरासी के संरक्षण में योगदान दें। परिकल्पित रूप से कहा जा सकता है कि शाम चौरासी गाँव एवं घराने में सूफ़ीमत और ध्रुपद-धमार की गायकी होने के कारण इस घराने के कलाकार भक्तिवादी बंदिशों का गायन अधिकतर करते हैं। इसी भक्तिवाद और गायन विशेषताओं के कारण कलावंत और विद्यार्थी उनसे बहुत प्रभावित होते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप शोधकर्ता ने इस शोध-पत्र को लिखने का प्रयास किया है। प्रत्यक्ष शोध प्रविधि के अन्तर्गत विभिन्न पुस्तकों एवं पत्रिकाओं द्वारा सामग्री एकत्रित कर शोध-पत्र को सम्पूर्ण रूप देने का प्रयास किया गया है। उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि शाम चौरासी घराने के कलाकारों ने राग व्याकरण की शुद्धता का विभिन्न अलंकारों, बहलावों लयकारियों और तानों का परिपूर्ण रूप से पालन किया कि राग की बंदिशें गाने और सुनने में सौंदर्यानुभूति का अनुभव कराती है।

शब्द-कुंजी : शाम चौरासी, गुरु-शिष्य, घराना, ध्रुपद-धमार, सलामत अली

शोध-पत्र

घराना शब्द का अर्थ

'घराना' शब्द के अनेक अर्थ हैं जैसे—घर, कुटुम्ब, परिवार, सम्प्रदाय, वंश परम्परा आदि। शाम चौरासी के क्षेत्र में 'घराना' शब्द इन्हीं में से किसी एक या अनेक अर्थों के साथ सम्बद्ध प्रतीत होता है। कुछ विद्वानों ने 'घराना' शब्द का अर्थ 'घर' माना है।[1] घराना शब्द का प्रयोग वंश-परंपरा अथवा गुरु-शिष्य परंपरा के रूप में किया जाता है। पर गुरु के मुख से प्राप्त की गई शिक्षा में कुछ न कुछ अपना मिलाकर, गुरु की तरह उसे गाना ही 'घराना' कहलाता है। भारतीय शाम चौरासी की यह विशेषता है कि संगीत शास्त्र के नियमों का और गुरु से प्राप्त तालीम के मूल सिद्धांतों का पालन करते हुए भी कलाकार को अपनी प्रतिभा और विशिष्ट कलात्मकता को भी दर्शाने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है। परिणाम स्वरूप एक ही घराने के अलग-अलग कलाकारों में प्रत्येक कलाकार की आवाज़ का लगाव, गायन विस्तार और स्वर के प्रयोग में भिन्नता होती है। जैसे भवन निर्माण के उपयोग में आने वाली वस्तुओं में चूना, ईट, सीमेण्ट, पत्थर, लकड़ी आदि की समानता होते हुए भी हमें उनसे बने भवनों में भेद दिखाई देता है।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार घराना शब्द की परिभाषा इस प्रकार है—

श्री कृष्णराव शंकर पंडित के शब्दों में ''कई शताब्दियों, बहुत वर्षों की परंपरा, उच्चकोटि के गुणों और कई पीढ़ियों की गुरु-शिष्य परंपरा सब मिलाकर एक घराने का निर्माण करते हैं।''[2]

कृष्णराव शंकर पंडित ने यह भी कहा है कि विभिन्न शैलियों के निर्माताओं ने अपनी प्रतिभा तथा कठिन साधना से एक विशिष्ट शैली का निर्माण किया, जो लोकप्रिय हुई तथा उनके शिष्यों द्वारा उसका प्रचार प्रचुर मात्रा में किया गया। इस शैली को घराना कह सकते हैं।[3]

एक विशेष 'घराना' तभी प्रतिष्ठित माना जाता है जब कई पीढ़ियों तक या कम से कम तीन पीढ़ियों तक गुरु-शिष्य परंपरा का सिलसिला चलता रहा हो।

संगीत में ख़्याल गायन शैली के विभिन्न घराने

प्राचीन भारतीय गायकों में कुछ ऐसे प्रसिद्ध गायक हो गए हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से एक विशेष प्रकार की गायन-शैली को जन्म देकर उसे

अपने पुत्रों तथा शिष्यों को सिखाकर प्रचलित किया। उनकी उस शैली का अनुकरण उनके शिष्यगण तथा कुटुम्बी अब तक करते चले आ रहें हैं। उन गायन शैलियाँ को ही घराने का नाम दिया जाता है।[4]

ख्याल गायन शैली के मुख्य घराने इस प्रकार हैं—

ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना, किराना घराना, दिल्ली घराना, पटियाला घराना, रामपुर-सहसवानघराना, कवाल बच्चों का घराना, इंदौर घराना, भिंडी बाजार घराना, तलवंडी घराना, कसूर घराना, मेवाती और शाम चौरासी घराना।

घराने के अंतर्गत किसी विशेष गुरु के वंशज का वह परिवार आता है, जिन्होंने उस घराना प्रणाली को विशेष रूप से ग्रहण और प्रचलित किया हो। घरानों के जन्म और नामकरण कुछ इस प्रकार है—

1. गायन की विभिन्न विशेषताओं के आधर पर विभिन्न घरानों का जन्म होता है।
2. घरानों का नामकरण निवास स्थानों के नाम से भी होता है। जैसे— ग्वालियर घराना, किराना घराना, आगरा घराना, पटियाला घराना और शाम चौरासी घराना। बाद में घराने के प्रतिनिधि जहाँ कहीं भी जाकर बस जाएँ, परन्तु उनके घराने का नाम वही रहता है।
3. घरानों में गुरु-शिष्य परम्परा का विशेष महत्त्व होता है। गुरु-शिष्य परंपरा के आधार पर ही घराने की गायकी का विकास होता है।
4. घराने वहाँ पर भी बनते हैं, जहाँ पर गायकों और वादकों का गायन और वादन के प्रस्तुतिकरण का ढंग एक जैसा हो। जहाँ पर गायकों के गले के गुण-धर्म एक जैसे हों अर्थात् एक जैसी शैली अथवा अंदाज़ को अपनाते हों।

मध्यकाल में जब संगीत कला घरानों में आई तो गुरु-शिष्य परंपरा से संगीत की शिक्षा घरानों में दी जाने लगी। गुरु आश्रमों का स्थान विभिन्न घरानों ने ले लिया। विभिन्न गायन शैलियों के आधार पर कई घराने बने, जिनमें गुरु-शिष्य परंपरा से संगीत की शिक्षा दी जाती थी।

स्वामी हरिदास ने संगीत-जगत को अमूल्य अनुपम रत्न भेंट किए, जो उनके शिष्यों के रूप में शाम चौरासी के इतिहास में सदा अमर रहेंगे। 'नाद-विनोद' के अनुसार स्वामी जी के आठ शिष्य थे, जिन्होंने समस्त उत्तर-भारत में संगीत का प्रचार किया। इन शिष्यों के नाम इस प्रकार है—1. बैजू 2. गोपाललाल 3. मदनराय 4. रामदास 5. दिवाकर पंडित (सूरज खाँ) 6 सोमनाथ पंडित (चाँद खाँ) 7. तानसेन 8. सौरसेन।[5]

ऐसे ही कुछ शाम चौरासी घराने का जन्म हुआ। शाम चौरासी गाँव में ऐसे संत फकीर हुए जो मौसिकी की तालीम में विद्वान थे। कई पीढ़ियों तक इस घराने में ध्रुपद-धमार को गाया गया, तब जाकर यह घराना प्रचलित हुआ और शाम चौरासी घराने के नाम से पहचाना जाने लगा।

शाम चौरासी घराने की पृष्ठभूमि मुग़ल बादशाह अकबर (1542-1605) के समय से मानी जाती है। बताया जाता है कि इस घराने की नींव 16वींसदी में दो नायकों सूरज खाँ और चाँद खाँ ने रखी थी। तलवंडी घराने और शाम चौरासी घराने के ये दो कलाकार मूल पुरुष माने गए हैं।[6] यह दोनों गायक अकबरी दरबार के गायक थे और मियाँ तानसेन के समकालीन गायक थे और उनके साथ बैठ कर गाया करते थे। सूरज खाँ का नाम पहले दिवाकर और चाँद खाँ का नाम सुधाकर था। एक विश्वास के अनुसार पंजाब के सभी ध्रुपद घरानों के अग्रणी ये दोनों कलाकार माने जाते हैं।

यह भी माना जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी के सुपुत्र बाबा श्री चन्द जी (1494-1629) के प्रताप और आशीर्वाद से इस गाँव का नाम शाम चौरासी घराने के रूप में पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुआ। जब बाबा श्री चन्द जी यहाँ पर आए थे तब इस गाँव का नाम खैराबाद था। सबसे पहले यहाँ पर शाम लाल नाम का एक बाल अपनी घोर तपस्या के कारण शख्स से शख्सीयत, बाल से 'बाबा' और लाल से 'शाह' बन चुका था। लोगों के विश्वास अनुसार, बाबा श्री चन्द जी के वचनों से बाबा शाम लाल या शामी शाह ने जन्म लिया, जिनसे शाम चौरासी नगर का नामकरण हुआ। कहा जाता है कि 'मुहम्मद शाह रंगीला' एक बार इस घराने के कलाकारों को सुनने आए थे और प्रभावित होकर उन्होंने अपनी खुशी से 84 गाँव की आमदन यहाँ के अध्यात्मिक गुरु शामी शाह को भेंट कर दी। अनेक विद्वानों का विचार है कि शामी शाह को अपना पीर मानने वाले यहाँ के संगीतकारों ने अपने घराने का नाम ही शाम चौरासी रख लिया। अब भी शामी शाह की मज़ार पर हर वर्ष मेला लगता है और प्रसिद्ध संगीतकार यहाँ पर हाज़री भरने आते हैं।

शाम चौरासी घराने के सूरज खाँ और चाँद खाँ के बाद वैसे तो और भी बहुत सारे कलाकार हुए पर जो नाम उभर कर सबके सामने आए वो थे मिसर खाँ या मिसरी खाँ और मोहम्मद खाँ। इस जोड़ी में से मिसर खाँ तो गायक थे और मोहम्मद खाँ उस समय के रिवाज़ अनुसार उनके साथ वीणा बजाते थे।

उनके बाद मिसर खाँ के सुपुत्र बाबा इनयात खाँ और बाबा करीम बख्श बहुत बड़े गायक हुए। इस जोड़ी से बड़े भाई इनायत खाँ वीणा बजाते थे और करीम खाँ गाते थे। बाबा इनायत खाँ और मियाँ करीम बख्श जो संगीत के पूर्ण पंडित थे और जिन्होंने बहुत सारी बंदिशों की रचना की आखिरी उम्र में केवल दरवेश हो गए थे। उस समय यह बात पूरे भारत में करीम बख्श के विषय में एक मुहावरे का रूप धारण कर गई थी कि ''यह वो साँप है जिसकी रेखा को कोई भी पार नहीं कर सकता।''

शाम चौरासी घराने के कलाकारों का परंपरागत वंश वृक्ष

चाँद खाँ, सूरज खाँ (अकबर के दौर में)

↓

मान खाँ, बचित्र खाँ

↓

लाल खाँ, शमस खाँ

↓

मुहम्मद खाँ, मिसर खाँ
↓
मौला बख्श खाँ, रहीम बख्श खाँ
↓
मियां इनायत खाँ, मियाँ करीम बख्श खाँ
↓
मीरा बख्श खाँ, खैर दीन खाँ
↓
अहमद अली खाँ, विलायत अली खाँ
↓
मुहम्मद हुसैन शामी, नियाज़ हुसैन शामी, दिलावर हुसैन शामी
↓
नज़ाकत अली खाँ, सलामत अली खाँ
↓
तसद्दक अली खाँ, अख़्तर अली खाँ, ज़ाकिर अली खाँ
↓
सदाकत अली
↓
रफ़ाकत अली
↓
शराफ़त अली खाँ, लताफ़त अली खाँ, सख़ावत अली खाँ, शफ़कत अली खाँ [7]

इस घराने की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इसके कलाकार शुरु से ही जोड़ियों में गाते आ रहे हैं, जैसे कि अलग-अलग समय में सूरज खाँ और चाँद खाँ, मिस्र खाँ और मोहम्मद खाँ, बाबा इनायत खाँ और बाबा करीम बख्श खाँ, मीरा बख्श और खैर दीन, विलायत अली खाँ और अहमद अली खाँ आदि ने जोड़ियों के रूप में ही गाया है। यहाँ तक कि इस घराने के वर्तमान प्रतिनिधि कलाकार उस्ताद नज़ाकत अली खाँ और उस्ताद सलामत अली खाँ हमेशा मिलकर गाते थे।

उस्ताद नज़ाकत अली के इंतकाल के बाद उस्ताद सलामत अली खाँ ने अपने बड़े सुपुत्र शराफ़त अली के साथ गाया। उस्ताद सलामत अली खाँ साहब के बाद उनके दोनों बेटों शराफ़त अली खाँ और शफ़कत अली खाँ ने जोड़ी के रूप में संगीत जगत की सेवा की। उस्ताद शराफ़त अली खाँ के बेटे शुजात अली और उस्ताद शफ़कत अली के दो बेटे फैज़ान अली और नादिर अली तीनों इकट्ठे गा रहे हैं और इनके अतिरिक्त शफ़कत अली खाँ अपने भाई लताफ़त अली खाँ के साथ भी गा रहे हैं।

शाम चौरासी घराने की गायकी की विशेषताएँ

शाम चौरासी घराने की गायकी एक अलग मुकाम पर है। अगर उनकी गायन शैली की बात करें तो उनकी गायकी में सभी घरानों की झलक पड़ती है। फिर चाहे वो ग्वालियर, किराना या फिर पटियाला घराना हो, इन सभी घरानों का मिश्रण होते हुए भी उनकी अपनी एक निजी गायकी है, जो उन्हें सभी घरानों से अलग करती है।

इस घराने के कलाकारों की आवाज़ और गायन उनके राग विस्तार, गीत एवं लय के लिए प्रसिद्ध है। स्वर का अभूतपूर्ण लगाव ही उन्हें तीसरे सप्तक से भी तीव्र स्वरों में स्पष्ट एवं सुमधुर लयकारी प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है।

इस घराने की उल्लेखनीय बात यह है कि चाहे कोई सरल राग हो या जटिल, वह उसे अपने कंठ से पूर्णतः सरलता से निकाल लेते हैं। शास्त्रीय संगीत की राग गायकी के असली रूप 'शुद्ध मुद्रा-शुद्ध वाणी' की पूर्ण अभिव्यक्ति उनकी गायकी में होती है। क्या विलंबित, क्या द्रुत, क्या अतिद्रुत तानों का तीव्र प्रवाह और स्वर का स्वेच्छानुसार प्रयोग, उनकी अद्वितीय गायकी को चार चाँद लगाती है।

इस घराने के गायकों की सपाट तानें, गमक, पलटे और ज़मज़मा उनकी गायकी की विलक्षण उपलब्धियों में से है, जो कि श्रोताओं को चकित कर देती है। उनकी तानें झरने की तरह बहती हैं और आलाप उतने ही गंभीर और गहरे होते है, जैसे किसी गहरे कूप में से ऊपर को उठती ध्वनियाँ। जितनी मिठास तार सप्तक में उतनी ही बुलंदी मंद्र सप्तक के स्वरों में, ये विविधता निस्संदेह एक कठिन साधना है। कठिन से कठिन तानें भी वो इतनी आसानी से लेते हैं कि श्रोतागण अश्चर्यचकित रह जाते हैं। लय चाहे कितनी भी द्रुत हो जाए लेकिन उनकी सपाट तान लय के साथ लिपट कर आती है।

ख्याल के साथ-साथ इस घराने के कलाकार ठुमरी, काफ़ी, टप्पा, तराना, सादरा, आदि गायन शैलियों को भाव और कला पक्ष के साथ गाने में प्रवीण हैं।

साधना एवं रियाज़

शाम चौरासी घराने के सभी गायकों को अगर हम सुने तो उनके बुजुर्गों से लेकर आज तक के कलाकारों की आवाज़ बहुत बुलंद है। उनकी जैसी गायकी इस दौर में और कहीं भी सुनने को नहीं मिलती।

आज के दौर में जिस मुकाम पर उनकी गायकी है, वह एक अच्छे गुरु, अच्छी तालीम और अच्छी साधना के बिना संभव नहीं है। बुलंद, खुली, वज़नदार आवाज़, ऊपर के सप्तक में आवाज़ लगाने का ढंग बिना साधना, बिना रियाज़ के संभव नहीं। तार सप्तक के स्वरों के साथ खेलने का अंदाज और आवाज़ लगाने का ढंग उनकी गायकी को बेमिसाल बनाता है।

परमात्मा ने इस घराने के सभी कलाकारों को बहुत ही पाकीज़ और खूबसूरत कंठ दिया है। सभी कलाकारों ने भगवान के दिए इस तोहफ़े को बाखूबी निख़ारा और इस्तेमाल किया। वह अपनी आवाज़ की सीमा और शक्ति के लिए जाने जाते हैं। उनकी आवाज़ की सीमा तीन सप्तक तक जाती है। ख़ूबसूरत आवाज़ से तो भगवान ने उन्हें नवाज़ा ही था, लेकिन उसको बनाने और निख़ारने के लिए उन्होंने खूब मेहनत भी की और कर्मठ रियाज़ भी किया। शाम चौरासी सूफ़ी फ़कीरों की धरती होने के कारण इनकी गायकी में फ़कीरी की झलक पड़ती है।

पंडित रविशंकर के अनुसार, ''उस्ताद सलामत अली खाँ ने गाने-बजाने में लयकारी को उस शिख़र पर पहुँचाया, जिसकी मिसाल नहीं मिलेगी।''[8]

"One has to be a Dravesh or Sadhu to make his mark in music. Music for me is an effort to reach God." Says Salamat Ali Khan. [9]

बेशक इस घराने के बहुत कलाकार हुए हैं, लेकिन 20-21वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध कलाकार उस्ताद नज़ाकत अली और सलामत अली की आवाज़ में रुहानी असर था। कुछ वर्ष पहले वह दोनों तो इस दुनिया को अलविदा कर गए, लेकिन अपने गाने की बदौलत आज भी ज़िंदा हैं क्योंकि उन्होंने पूरे मन से इतना रियाज़ किया कि उनकी आवाज़ एक नियाब हीरा बन गई। उनका गायन सुनने में इतना ज़्यादा मुश्किल है तो ज़ाहिर सी बात है, कि उनका रियाज़ कितना मुश्किल होगा।

साधना एवं रियाज़ का ढंग

1. खुली और ज़ोरदार आवाज़ में ख़रज का अभ्यास।
2. ध्रुपद्धियों का घराना होने के कारण 'नोम-तोम' के आलाप का अभ्यास।
3. मंद्र, मध्य और तार सप्तक के स्वरों का क्रम अनुसार रियाज़।
4. प्रत्येक स्वर पर तान की साधना और तैयारी।
5. सपाट तान का रियाज़।
6. प्रत्येक स्वर पर गमक के प्रयोग का अभ्यास।
7. मेरू खंड की तानों का रियाज़।
8. लय में निपुण होने के लिए विभिन्न प्रकार की लयकारियों और तिहाईयों का अभ्यास।
9. तानपुरे और स्वरमंडल के साथ स्वर का अभ्यास।
10. प्रत्येक दिन में 12-18 घंटे का निरंतर रियाज़।
11. द्रुत और अति द्रुत लय में विभिन्न प्रकार की तानों का रियाज़, जैसे—अचरक तान, सपाट तान और छूट की तान आदि।
12. ब्रज, फ़ारसी (पशतो) भाषा में गाने का अभ्यास और इन भाषाओं को सीखने में रुचि।
13. उप-शाम चौरासी की गायन शैलियों—ठुमरी, काफ़ी आदि में कण, खटका, मुर्की, बहलावों आदि का अभ्यास।[10]

इस तरह इतने मुश्किल और कठिन रियाज़ के साथ शाम-चौरासी घराने के कलाकारों ने संगीत जगत में ख्याति प्राप्त थी।

आलाप, बोलालाप और तान क्रिया की शैली

शाम चौरासी घराने की गायकी भावपूर्वक है। उनके आलाप और स्वरों का लगाव भावपूर्वक होता है, जब वह आलाप तथा स्वर विस्तार करते हैं तो पूरी तरह हर एक स्वर को गहराई से गाते हैं। इस घराने पर किराना घराने का बहुत प्रभाव है। किराना घराने में एक-एक स्वर पर विशेष रूप से ठहराव करते हुए सुकून से और भावमई ढंग से स्वर को लगाना किराना घराने की विशिष्टता है। हर एक स्वर का विस्तार सूक्ष्म ढंग से करना किराना घराने की विलक्षणता है। सरगम, तान इत्यादि में अत्याधिक जटिल और अलंकृत ढंग से प्रयोग करना इस घराने की भिन्न विशेषता है। इस तरह शाम चौरासी घराने के गायन और किराना घराने के गायन में बहुत सारी समानताएँ हैं। स्वर के लगाव का ढंग पूरी तरह से किराना घराने का है। राग के स्वरों की बढ़त करते समय उसमें पूरी तरह डूबकर आलाप तथा स्वरों को भावपूर्ण ढंग से पेश करना उनकी गायक की विलक्षणता को दर्शाता है।

शाम चौरासी घराने के कलाकारों की गायकी चमत्कारिकता पूर्ण है। जिस अनुसार उनकी तानों की गति रहती है, सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि कोई चमत्कार हो रहा है। जिस गति के साथ उनकी तीन सप्तक तक तान जाती है, तानों के विभिन्न स्वरसमूहों के साथ जब वो तान लेते हैं तो सुनने वाला चकित रह जाता है। जैसे कि www. movieboxonline. co. uk की एक रिकार्डिंग में राग मालकौंस की बंदिश ''सा सुन्दर बदन'' को सलामल अली और उनके दोनों बेटों शराफ़त अली और शफ़कत अली ने गाया है। उसमें जिस गति में सपाट और छूट की तानें ली हैं वो किसी चमत्कार से कम नहीं है। श्रोतागण हैरान हो जाते हैं और सोचते हैं कि इतनी तेज़ गति में कोई कैसे गा सकता है।[11]

सलामल अली साहब तानों में विभिन्न स्वर समूहों और मेरुखण्ड का भी प्रयोग करते थे। स्वरों के अलग-अलग समिश्रणों से जो उनकी तान रहती थी, वो बाकमाल हैं। वह सपाट तान, छूट की तान, गमक तान, तान पलट और ज़मज़मा को बाखूबी निभाने के लिए जाने जाते हैं।

इस घराने की एक और विशेषता यह भी है कि इसमें कलाकारों द्वारा एक स्वर पर तेज़ी से तान लेने का भी रिवाज़ है। जो अचरक तान की तरह होती है। गायन में रंजकता पैदा करने के लिए इस घराने के कलाकार लड़ंत की तान भी लेते हैं। ज़्यादातर उनकी रेकार्डिंग्स में छूट की तान भी सुनने को मिलती है।

सलामत अली खाँ ने बातचीत के दौरान बताया है कि इस घराने के जन्म से ही बुजुर्गों ने ध्रुपद धमार को गाया है। ध्रुपद धमार में आलाप और स्वरों की बढ़त इस घराने की विशेषता है। उनके द्वारा यह भी बताया गया है कि वह अपने घराने के पहले कलाकार हुए है जिन्होंने ध्रुपद-धमार के साथ-साथ खयाल गायकी भी शुरू की। इनके वालिद विलायत अली खाँ साहब तक सभी कलाकार ध्रुपद-धमार ही गाते थे।[12]

गायकी में ग्वालियर, पटियाला और किराना घरानों का संगम

इस घराने के कलाकारों की गायकी अगर हम सुने तो उसमें कई घरानों का संगम दिखाई देता है जैसे कि शाम चौरासी घराने के बाबा करीम बख्श ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक हद्दू खाँ और रहमत खाँ को बहुत मानते थे और उनके साथ बहुत प्रेम करते थे। यहाँ तक कि वह अपना तानपूरा ग्वालियर के हद्दू खाँ के पुत्र रहमत खाँ के अलावा और किसी को नहीं देते थे। एक बार उनकी मुलाकात हद्दू खाँ के दामाद इनायत खाँ

के साथ हुई और उन्होंने अपने आपको गायकी में छोटा बताते हुए ग्वालियर घराने की बहुत तारीफ़ की और बाबा करीम बख्श ने उन्हें 'राग नायिकी कान्हड़ा' सुनाया।[13]

सलामत अली खाँ ने अपने एक प्रोग्राम में यह बताया है कि उन्होंने पटियाला घराने के अली बख्श (तान के पीर-जरनैल साहिब) और किराना घराने के रजब अली खाँ (देवास) की तान का 7-8 वर्ष रियाज़ किया।[14] एक बातचीत के दौरान उन्होंने और उनके छोटे बेटे शफ़कत अली खाँ ने बड़े गुलाम अली खाँ की तारीफ करते हुए उनको बहुत बड़े गायक बताया। ज़ाहिर सी बात है कि शाम चौरासी घराने में ग्वालियर, पटियाला और किराना घरानों का संगम है।

दूसरी विशेष खास बात यह है कि होशियारपुर पीरों-फ़कीरों की धरती है, होशियारपुर के बसंत महोत्सव में सभी घरानों के बड़े-बड़े उस्ताद हाज़िरी लगवाते थे। तब नज़ाकत अली-सलामत अली खाँ बहुत छोटे थे और इन्होंने विभिन्न घरानों के उस्तादों का गाना सुना और उसको अपनाया। इसलिए इनके गाने में ग्वालियर, किराना, पटियाला आदि घरानों का असर दिखाई देता है।

भावपूर्ण गायकी

इस घराने के गायकों की गायकी भावपूर्ण है। राग की प्रकृति और रस के अनुसार वो राग को भावमयी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनके आलाप भावप्रधन होते है। उनकी गायकी श्रोताओं को आग्रह करती है। राग के भाव को समझते हुए वो इस तरह गायन पेश करते हैं कि श्रोतागणों को उनकी गायकी पसंद आती है और हर वर्ग के लोगों को आकर्षित करती है।

उनके घराने की भावपूर्ण गायकी इसलिए है क्योंकि उनके सभी बुजुर्ग बहुत बड़े ध्रुपदिए रहे हैं और गायन के साथ-साथ यह घराना फ़कीरों का घरानाभी माना जाता है। फ़कीरों की गायकी भावपूर्ण होती थी और ध्रुपद-धमार गाना तो है ही भक्तिवादी एवं भावपूर्ण गायकी।

आज भी इस घराने के ख़्याल गायक ध्रुपद, धमार, ख़्याल, ठुमरी, आदि गायन शैलियों को भावपूर्ण ढंग से गाते हैं। संगीत का अर्थ ही भावों को उजागर करना है। भाव के बिना संगीत नीरस है। भाव के बिना संगीत इस तरह है जैसे कोई बिन फलों के सूखा हुआ पेड़ हो। उनकी गायकी की विशेष बात यह है कि किसी को संगीत समझ ना भी आए, फिर भी उनकी गायकी उपरोक्त गायन विशेषताओं-अलंकारों, बहलावों लयकारियों, तानों औरराग की बंदिशों में सौंदर्यानुभूति होने के कारण श्रोतागणों को आकर्षित और मंत्रमुग्ध करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गोस्वामी, हरी किशन, भारतीय संगीत की परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स, द्वितीय संस्करण 2014, नई दिल्ली, पृ. 11
2. वही, पृ. 13
3. धर्मपाल, किराना घराने की गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 12
4. वसंत, संगीत विशारद, हमारे संगीत रत्न, संगीत कार्यलय, हाथरस, पृ. 380
5. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, हमारे संगीत रत्न, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ. 446
6. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980, पृ. 123,133
7. बलवीर सिंह कंवल, पंजाब दे संगीत घराणे अते भारती संगीत परम्परा, प्रकाशक सिंह ब्रदर्ज़, अमृतसर, पृ. 60
8. वही, पृ. 333
9. जोगिन्द्र सिंह बावरा, भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, ए.बी.एम. पब्लिकेशन, मार्डन मार्केट, जलंधर, संस्करण 1994, पृ. 163
10. वही, पृ. 161-163
11. https://www. youtube. com accessed on May 3, 10.20 AM
12. http://youtu. be accessed on May 5, 11.00 AM
13. बलवीर सिंह कंवल, Opcit : पृ. 190
14. https://youtu. be accessed on May 6, 10.00 AM